Bhagirathi B. S. S. Secondary School

Subject – Sanskrit (R)

Class – VIII

पाठ-२ विधिलिङ्लकारस्य पुनरावृत्तिः

(वार्तालापः)

नोट!- सभी छात्र इस वार्तालापः को अपनी कॉपी में लिखें।

छात्रों को ज्ञात होगा कि विधिलिङ् लकार का प्रयोग प्रार्थना, इच्छा या चाहिए के अर्थ में किया जाता है; उदाहरण!-

छात्रः समये पाठं स्मरेत्। → छात्र को समय पर पाठ याद करना चाहिए।

वयम् प्रातः सूर्योदयात् पूर्वम् उत्तिष्ठेम। → हमें सवेरे सूर्य उदय से पूर्व उठना चाहिए।

वार्तालाप

अनुव्रतः : (प्रातः उत्थाय) प्रणमामि पितृमहोदय!
(सवेरे उठकर) प्रणाम करता हूँ पिता महोदय!

पिता : दीर्घायुः भव पुत्र! त्वम् अधुना किम् करोषि?
दीर्घायु हो पुत्र! तुम अब क्या करोगे?

अनुव्रतः : अधुना तु षट्वादनवेला अस्ति। अहं तु सप्तवादनवेलापर्यन्तं स्वप्तुमिच्छामि।
अब तो सुबह छः बजे का समय है। मैं तो सात बजे के बाद सोना चाहता हूँ।

पिता : न, न पुत्र! नेदमुचितम्। नरः सूर्योदयात् पूर्वमेव उत्तिष्ठेत्।
नहीं, नहीं पुत्र! यह उचित नहीं है। मनुष्य को सूर्योदय से पहले ही उठना चाहिए।

Scanned with CamScanner

अनुज: : शीघ्रमुत्थाय नरः किं कुर्यात् ?

शीघ्र उठकर मनुष्य को क्या करना चाहिए ?

पिता : सर्वप्रथमम् नरः ईश्वरम् नमेत् । ततः दैनिककार्यं कृत्वा जनः उद्यानं गच्छेत्, तत्र च योगाभ्यासम् आचरेत् । युवकाः तु अवश्यमेव व्यायामं कुर्युः ।

सबसे पहले मनुष्य को ईश्वर को नमस्कार करना चाहिए। फिर दैनिक कार्य करके मनुष्य को बगीचे में जाना चाहिए और वहाँ योगाभ्यास करना चाहिए। युवकों को तो अवश्य ही व्यायाम करना चाहिए।

अभ्यास कार्य

1) शब्दार्थ

1. उत्थाय = उठकर
2. दीर्घायुः भव = दीर्घायु हो
3. षट्वादनवेला = छः बजे का समय
4. स्वप्तुम् = सोना
5. आचरेत् = करना चाहिए।
6. नमेत् = प्रणाम करना चाहिए।
7. उत्तिष्ठेत् = उठना चाहिए।

2) प्रश्न / उत्तर

क) सर्वप्रथमम् नरः कं नमेत् ?
सर्वप्रथमम् नरः ईश्वरम् नमेत् ।

ख) प्रातः काले उद्यानं गत्वा जनः किं कुर्यात् ?
प्रातः काले उद्यानं गत्वा जनः योगाभ्यासम् कुर्यात् ।

ग) स्नात्वा नरः कीदृशानि वस्त्राणि धारयेत् ?
स्नात्वा नरः स्वच्छानि वस्त्राणि धारयेत् ।

3) 'पठ्' और 'कृ' धातु रूप विधिलिङ् में अपनी कापी में लिखिए व याद करो। (इसमें आप 7 की संस्कृत व्याकरण की सहायता लें)।

Scanned with CamScanner